लू-पान
बढ़ई का शागिर्द

डेमी

एक बार लू-पान नाम का एक छोटा लड़का था जो अपने बढ़ई पिता के साथ लू-फैमिली-बे नामक गाँव में रहता था. जब उनके पिता काम कर रहे होते, तो लू-पान उन्हें बड़े ध्यान से देखता था और उनकी मदद करता था. वो देखता था कि फर्नीचर बनाने के लिए पिता अपनी आरी, छेनी और औज़ारों का उपयोग कैसे करते थे.

जब तक लू-पान थोड़ा बड़ा हुआ तब तक वो बढ़ईगीरी के सभी अलग-अलग औजारों को संभालने में सक्षम हो गया. जब उसके पिता स्टूल और अलमारियां बनाते, तो लू-पान वही चीज़ें छोटे बच्चों के लिए बनाता था.

एक बार जब लू-पान ने देखा कि उसकी माँ फर्श पर चटाई पर बैठी सिलाई कर रही थीं, तो उसने उनके लिए एक छोटी सी कुर्सी बनाई. "माँ," उसने कहा, "शायद आप इस कुर्सी पर बैठें तो फिर आपकी पीठ में दर्द नहीं होगा."

लू-पान का दिमाग तेज और फुर्तीला था. सभी पड़ोसियों को लगता था कि वो एक होनहार नौजवान था. उनमें से कुछ ने उसके पिता से उसे अपने शागिर्द के रूप में लेने का आग्रह किया. "मेरे हाथ बहुत अनाड़ी हैं," उसके पिता ने उन्हें उत्तर दिया. "वो मुझसे बहुत कुछ नहीं सीख पाएगा. मैं उसे एक असली मास्टर बढ़ई के पास सीखने के लिए भेजूंगा."

फिर दो साल बीत गए. लू-पान अब बारह साल का हो गया. एक दिन उसके पिता ने उसके लिए एक अच्छा घोड़ा खरीदा और उसे सौ चाँदी के सिक्के दिए. "मेरे लड़के," उन्होंने अपने बेटे से कहा, "इस घोड़े को लो और बढ़ईगीरी के मास्टर को खोजने के लिए चुंगनांग पर्वत पर जाओ. वहां जाकर तुम उनसे सीखो."

लू-पान ने अपने कंधे पर एक गठरी रखी और वो चुंगनांग पर्वत के लिए निकल पड़ा. उसने निन्यानबे दिनों तक यात्रा की, वो निन्यानवे बड़े पहाड़ों पर चढ़ा और उसने निन्यानवे चौड़ी नदियां पार कीं. क्या वो अपनी यात्रा के अंत तक मास्टर बढ़ई को ढूंढ पाएगा?

फिर वो एक ऊंची पहाड़ की चोटी पर सांस के लिए रुका और वो हार मानने वाला ही था, तभी उसने एक फूस की झोपड़ी की छत देखी. वो अपने घोड़े पर सवार होकर झोंपड़ी के पास गया. उसका दिल तेजी से धड़क रहा था. जब उसने धक्का दिया, तो दरवाज़ा खुला, तो उसने देखा कि बढ़ई के औजार - कुल्हाड़ियाँ, आरी, छेनी और हथौड़े फर्श पर बिखरे पड़े थे. आगे देखने पर उसकी नज़र एक सफेद दाढ़ी वाले बूढ़े व्यक्ति पर पड़ी जो बिस्तर पर लेटा हुआ था. लू-पान बहुत खुश हुआ. "वो मास्टर बढ़ई ही होना चाहिए," उसने सोचा. फिर उसने उन सारे औजारों को ठीक से सजाया और बूढ़े आदमी के जागने का इंतजार करने के लिए वहीं बैठ गया. जब पश्चिम में सूरज ढला तभी बूढ़े ने कुछ हलचल शुरू की.

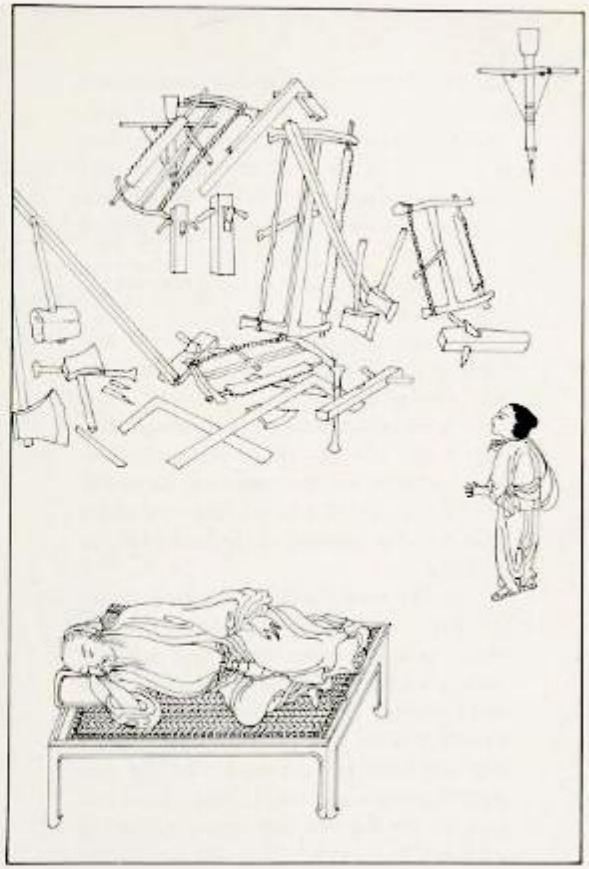

लू-पान जल्दी से उसके कमरे में गया और वो बूढ़े आदमी के सामने फर्श पर घुटने टेक कर बैठ गया. अपना सिर बहुत नीचे झुकाते हुए, उसने कहा: "मेरा नाम लू-पान है. मैं दूर लू फैमिली की खाड़ी से आया हूं. कृपया आप मुझे अपने शागिर्द के रूप में लें और मुझे अपनी कला सिखाएं."

"तुम बढ़ईगीरी क्यों सीखना चाहते हो?" बूढ़े आदमी ने पूछा.

"मैं लोगों के लिए घर बनाना चाहता हूं, पुल बनाना चाहता हूं, और लोगों के लिए अन्य काम की चीजें बनाना चाहता हूं," लड़के ने जवाब दिया.

"तुम्हारे इरादे काफी अच्छे हैं. शायद मैं तुम्हें अपने प्रशिक्षु के रूप में ले लूं. लेकिन उससे पहले, मुझे तुम्हारे साहस के साथ-साथ तुम्हारे कौशल का भी परीक्षण लेना होगा. तुम्हें इन सभी औज़ारों को सुधारना होगा." और फिर मास्टर ने फर्श पर पड़े औजारों की ओर इशारा किया.

लू-पान औजारों को तेज करने के लिए एक विशाल पत्थर पर ले गया. उसने सात दिन और सात रातों तक कड़ी मेहनत की और छेनी, कुल्हाड़ी, आरी और हथौड़ों को दुरुस्त किया. फिर वो उन सभी औज़ारों को दिखाने अपने गुरु के पास ले गया, यह आशा करते हुए कि वो उसके काम से प्रसन्न होंगे. लेकिन बूढ़े ने केवल कुड़कुड़ाते हुए उससे यह कहा: "अब तुम मेरी झोंपड़ी के सामने खड़े उस बड़े पेड़ को गिरा दो."

वो इतना बड़ा पेड़ था कि दो आदमी अपनी बाहों को जोड़कर उसको घेर नहीं सकते थे. पेड़ के जमीन पर गिरने से पहले लू-पान ने बारह दिन और बारह रात तक उसकी काट-छाँट की. क्या अब गुरु प्रसन्न होंगे?

मास्टर ने लू-पान को एक और काम दिया. लू-पान को उसे पेड़ के तने से एक चिकनी, गोल बल्ली (बीम) बनानी थी. थके हुए, लू-पान ने कुल्हाड़ी उठाई और फिर वो बारह दिनों और बारह रातों तक संघर्ष करता रहा.

अंत में, उसने वो काम समाप्त किया. लेकिन वो भी मास्टर के लिए पर्याप्त नहीं था. मास्टर ने लड़के से बीम में चौबीस-सौ छेद काटने का आदेश दिया - छह-सौ चौकोर, छह-सौ गोल, छह-सौ त्रिकोणीय आकार के और छह-सौ अंडाकार छेद. एक छेनी के साथ काम करते हुए, लू-पान ने बारह दिन और बारह रातों में उन चौबीस-सौ छेदों का काम पूरा किया. उसके बाद उसमें अन्य कोई काम करने का दम नहीं बचा था.

इस बार बूढ़ा मास्टर लू-पान के काम से खुश हुआ. "बहुत अच्छा किया, मेरे लड़के," उसने कहा. "मैं देख रहा हूँ कि कोई भी समस्या इतनी कठिन नहीं है जिसे तुम सुलझा न सको. तुम में साहस भी है. अब मैं तुम्हें वो सब सिखाने के लिए तैयार हूँ जो मैं जानता हूँ."

उसके बाद बूढा बढ़ई, लू-पान को मॉडलों से भरे एक कमरे में ले गया. वे सभी बढ़ईगीरी शिल्प के बेहतरीन उदाहरण हैं. लू-पान उन्हें देखकर चकित रह गया. "अब इन मॉडलों में से प्रत्येक को अलग-अलग खोलो और फिर उन्हें दुबारा से एक साथ इकठ्ठा करके बांधों," मास्टर ने आदेश दिया.

मॉडलों से प्रभावित होकर, लू-पान अपने काम में लग गया. हर दिन सुबह होने से पहले वो कमरे में जाता था. और वो तब ही बाहर निकलता था जब आकाश में तारे चमकने लगते थे. उसने हरेक मॉडल को अलग किया और उन सभी को फिर से एक साथ जोड़ा. धीरे-धीरे वो सभी टुकड़ों को अच्छी तरह से जान गया. उसने पूरे तीन साल मास्टर की झोपड़ी में इसी तरह काम किया.

तीसरे वर्ष के अंत में, मास्टर यह जानना चाहते थे कि लू-पान ने कितना सीखा था. इसलिए, उन्होंने उन सभी मॉडलों को जला दिया, और लड़के से उन्हें खुद बनाने का आदेश दिया.

लू-पान सभी मॉडलों को अपनी याददाश्त से बनाने में सफल रहा. अब तक वो पंद्रह वर्ष का हो गया था, और वो कोई भी ऐसा नया डिजाइन बनाने में सक्षम था जो मास्टर उसे बनाने का आदेश देते थे.

मास्टर अपने शागिर्द की प्रगति से संतुष्ट थे. "तुमने हमारे शिल्प में महारत हासिल की है," मास्टर ने उससे कहा. "अब समय आ गया है कि तुम मुझे छोड़कर चले जाओ."

"कृपया मुझे यहाँ तीन साल और रहने दें," लड़के ने भीख माँगी.

"अब से," मास्टर बढ़ई ने उत्तर दिया, "तुम असली काम के ज़रिये ही सीखोगे, और वो भी अपने दम पर. हाँ, एक बात कभी मत भूलना मेरे युवा मित्र, यह सीखने का सिलसिला जीवन भर चलेगा."

उसके बाद लू-पान ने मास्टर से छुट्टी ली. उसकी आंखों में आंसू थे.

जैसे-जैसे साल बीतते गए, लू-पान न केवल एक बहुत प्रसिद्ध बढ़ई बन गया, बल्कि एक महान वास्तुकार, इंजीनियर, आविष्कारक और लेखक भी बन गया.

उसने छोटे-छोटे घर बनाए

उसने बड़े घर बनाए

सर्दियों के घर

और गर्मी के घर

महान हॉल

मंडप,

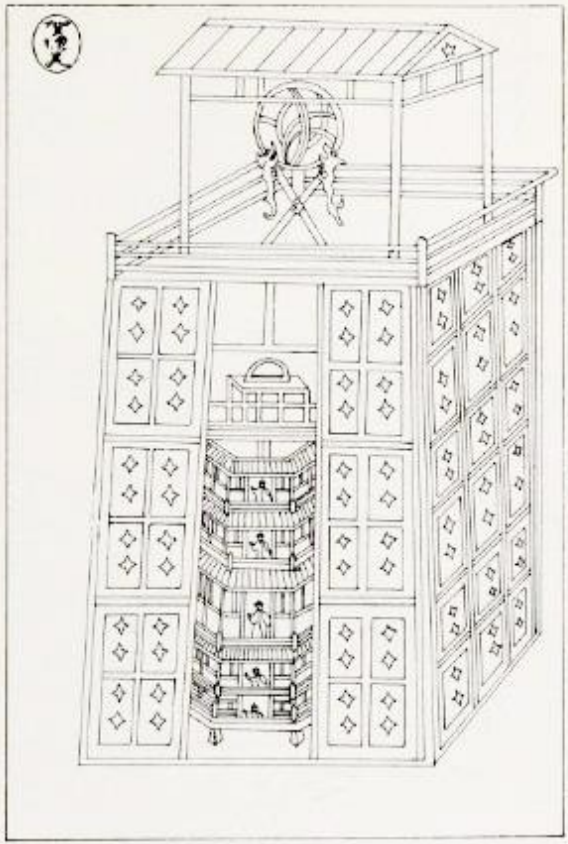

और खगोल शास्त्र की वेधशालाएं भी बनाईं.

उसने पुल बनाए, और उसने कम्पास और ताले का आविष्कार भी किया.

उसने रोटरी मिल (चक्की) का डिजाइन तैयार किया.

क्रेन, रथ और

एक खिलौना हेलीकाप्टर जो वास्तव में उड़ सकता था

और उसने पहली पतंग भी बनाई.

साथ में लू-पान चिंग, या लू-पान ने एक बड़ी किताब "मानुएल" भी लिखा. इस पुस्तक में लकड़ी को काटने और बीमों को तराशने के तरीके को दर्शाने वाले कई चित्र थे, और यह भी बताया गया था कि कौन से दिन निर्माण के लिए भाग्यशाली होंगे.

लू-पान के बढ़ईगीरी के तरीकों का सदियों से पालन किया जाता रहा है, और उसका लिखा मैनुअल आज भी मौजूद है. इस मास्टर द्वारा शुरू की गई परंपरा के कारण ही आज चीन में बढ़ईगीरी ने बहुत उच्च स्तर का कौशल बनाए रखा है.

लू-पान, या कुंगशु-पान को सभी चीनी कारीगरों में सबसे महान माना जाता है. लू-पान के इर्द-गिर्द इतनी सारी किंवदंतियाँ गढ़ी गई हैं कि कुछ लोगों को आश्चर्य होता है कि क्या वो वास्तव में कभी अस्तित्व में था. वो एक वास्तविक व्यक्ति था जो पांचवीं शताब्दी, ईसा पूर्व में चाउ राजवंश के दौरान रहता था. क्योंकि वो लू (शानतुंग) राज्य में रहता था, इसलिए उसका नाम लू-पान पड़ा.